Dr. Kumari Priyanka

History department

H.D Jain college, ara

Notes for PG 1,CC3, UNIT 1

Topic:–हर्षवर्धन के साम्राज्य की सीमा(The Extent of Harshvardhan's Empire)

सातवीं शताब्दी में अपने सैनिक अभियानों के परिणामस्वरूप हर्षवर्द्धन ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। के० एम० पणिक्कर के अनुसार, हर्ष के साम्राज्य की सीमा आसाम से कश्मीर तक तथा हिमालय से विंध्याचल तक विस्तृत थी। वह संपूर्ण उत्तरी भारत का स्वामी था। नेपाल पर भी उसका अधिकार था। हर्ष के साम्राज्य की ५ास्तविक सीमा अत्यंत ही विवादास्पद है। कुछ विद्वानों ने उसका साम्राज्य बहुत विस्तृत माना है, तो कुछ ने अत्यंत संकुचित । सत्य दोनों के बीच है। डॉ० राधाकुमुद मुखर्जी के विचारानुसार, हर्ष के साम्राज्य के अंतर्गत सीधे नियंत्रणवाले क्षेत्र बहुत कम थे; परंतु उसके प्रभाव के अंतर्गत बड़ा क्षेत्र था। कामरूप, कश्मीर, नेपाल और वल्लभी पर उसका प्रभाव था, सीधा नियंत्रण नहीं। डॉ० आर० सी मजमुदार और प्रो० नीहाररंजन राय के अनुसार हर्ष का अधिकार सिर्फ 'मध्यभारत' पर ही था; परंतु उसके प्रभाव-क्षेत्र के अंतर्गत पश्चिम में जालंधर से पूर्व में आसाम, दक्षिण में नर्मदा नदी की घाटी एवं वल्लभी से उड़ीसा में गंजाम तक के क्षेत्र तथा उत्तर में नेपाल और कश्मीर के प्रदेश सम्मिलित थे।हर्षवर्द्धन के साम्राज्य की वास्तविक जानकारी उसके अभिलेखों, हर्षचरित तथा ह्वेनसांग के विवरणों से प्राप्त होती है। इनके आधार पर कहा जा सकता है कि अहिच्छत्रा एवं श्रावस्ती भुक्तियाँ उसके राज्य के अंतर्गत थीं तथा कान्यकुब्ज (कन्नौज), प्रयाग एवं मगध पर स्पष्ट रूप से उसका अधिकार था। ऐहोल-प्रशस्ति के अनुसार हर्ष सकलोत्तरापथेश्वर (तक्षशिला से श्रावस्ती तक के क्षेत्र का मालिक) था। ह्वेनसांग कपिलवस्तु, नेपाल, कन्नौज आदि राज्यों की राजनीतिक अवस्था का उल्लेख तो करता है, परंतु बिहार और उत्तर-प्रदेश स्थित वैसे राज्यों का वर्णन नहीं करता है, जो संभवतः उसके राज्य के अंतर्गत थे। इनकी संख्या 19 है। ये राज्य थे-1. मथुरा, 2. थानेश्वर, 3. श्रुहण (सुंधगाँव) 4. ब्रह्मपुर 5. गोविंदशान, (रामपुर और पीलीभीत), 6. अहिछत्र, 7. अतरंजीखेड़ा, 8. संकिशा, 9. अयोध्या, 10. अयोमुख, 11. प्रयाग, 12. कौशांबी, 13. विशोक, 14. श्रावस्ती, 15. रामग्राम 16. कुशीनगर, 17. वाराणसी, 18. बसाढ़, 19. वज्जि। वह प्रयाग-सम्मेलन के अवसर पर उपस्थित 20 राज्यों के राजाओं की सूची भी देता है। निम्नलिखित राज्यों के राजाओं ने प्रयाग सम्मेलन में भाग लिया- 1. हिरण्यपर्वत (मुंगेर), 2. चम्पा, 3. कजांगल (राजमहल), 4. पुण्ड्रवर्द्धन, 5. समतट, 6. ताम्रलिप्ति, 7. कर्णसुवर्ण 8. कामरूप, 9. अयोध्या, 10. नेपाल, 11. कपिशा, 12. उत्थान, 13. काश्मीर, 14. टक्क, 15. चीनभुक्ति, 16. जालंधर, 17. कुलुट, 18. शतद्रु, 19. पारियात्र तथा 20. मथुरा। इनमें उत्तरप्रदेश, बिहार, बंगाल, आसाम और उड़ीसा के अतिरिक्त

काश्मीर, पंजाब, पश्चिमोत्तर के राज्य एवं नेपाल का भी उल्लेख है। ह्वेनसांग मालवा, वल्लभी, गुर्जर तथा सिंध पर भी हर्ष के आधिपत्य की पुष्टि करता है। इन साक्ष्यों से स्पष्ट हो जाता है कि हर्ष का राज्य पूर्वी पंजाब के कुछ भाग पर, संपूर्ण उत्तरप्रदेश, बिहार, बंगाल और उड़ीसा तक विस्तृत था। वल्लभी, मालवा, सिंध एवं कामरूप उसके प्रभावक्षेत्र के अंतर्गत थे, परंतु काश्मीर और नेपाल स्वतंत्र थे, तथापि हर्ष की इनके साथ मैत्री थी। चीन के साथ भी हर्ष ने मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किए तथा अपना दूत वहाँ भेजा। 641 ई० में हर्ष ने अपना राजदूत चीन भेजा। हर्षवर्द्धन के समय में चीन से दो मिशन (641, 643) भारत आए। तीसरा मिशन 646 ई में चीन से भारत के लिए खेला, परंतु उसके पहुँचने के पूर्व ही हर्ष की मृत्यु हो चुकी थी ।